परमेश्वर का मंदिर

फ्रैंकलिन द्वारा अध्ययन

पुराने नियम में परमेश्वर (यहोवा) और उसकी महिमा, मंदिर में अपने लोगों के मध्य वास करती थी।

दाऊद जिसके विषय में परमेश्वर ने कहा : जो मेरे मन के अनुसार है (प्रेरितों 13:22), उसकी बड़ी और अटल इच्छा थी कि वह **परमेश्वर के लिए मंदिर बनवाए**, जो उसका निवासस्थान हो और जहाँ वह अपने लोगों के मध्य वास करे।

1 इतिहास 28:1-3 दाऊद ने इस्राएल के सब हाकिमों को अर्थात् गोत्रों के हाकिमों, और राजा की सेवा टहल करनेवाले दलों के हाकिमों को, और सहस्रपतियों और शतपतियों, और राजा और उसके पुत्रों के पशु आदि सब धन सम्पत्ति के अधिकारियों, सरदारों, और वीरों, और सब शूरवीरों को यरूशलेम में बुलवाया। तब दाऊद राजा खड़ा होकर कहने लगा, "हे मेरे भाइयो! और हे मेरी प्रजा के लोगो! मेरी सुनो, मेरी इच्छा तो थी कि यहोवा की **वाचा के सन्दूक** के लिये, और हम लोगों के परमेश्वर के **चरणों की पीढ़ी** के लिये विश्राम का **एक भवन बनाऊँ**

- यह उनकी भी अभिलाषा है जिनका मन दाऊद के समान है

और मैं ने उसके बनाने की तैयारी की थी। परन्तु परमेश्वर ने मुझ से कहा, 'तू मेरे नाम का भवन बनाने न पाएगा, क्योंकि तू युद्ध करनेवाला है और तू ने लहू बहाया है। (28:6) उसने मुझ से कहा, 'तेरा पुत्र सुलैमान ही मेरे भवन और आँगनों को बनाएगा, क्योंकि मैं ने उसको चुन लिया है कि मेरा पुत्र ठहरे, और मैं उसका पिता ठहरूँगा।

मंदिर की तैयारी

1 इतिहास 29:1-2 फिर राजा दाऊद ने सारी सभा से कहा, "... **यह भवन मनुष्य के लिये नहीं, यहोवा परमेश्वर के लिये बनेगा।** 2 मैं ने तो **अपनी शक्ति भर, अपने परमेश्वर के भवन** के निमित्त ... **सोना**... **चाँदी** ...**पीतल** ... **लोहा**... **लकड़ी** ... **सुलैमानी**

पत्थर, और जड़ने के योग्य **मणि**, और पच्चीकारी के काम के लिये **भिन्न-भिन्न रंगों के नग**, और सब भाँति के **मणि** और बहुत सा **संगमर्मर** इकट्ठा किया है। 3 फिर **मेरा मन अपने परमेश्वर के भवन में लगा है**, इस कारण जो कुछ मैं ने पवित्र भवन के लिये इकट्ठा किया है, उस सबसे अधिक मैं **अपना निज धन भी जो सोना चाँदी के रूप में मेरे पास है, अपने परमेश्वर के भवन के लिये दे देता हूँ। अर्थात् तीन हज़ार किक्कार ओपीर का सोना**, और **सात हज़ार किक्कार तायी हुई चाँदी**, जिससे कोठरियों की दीवारें मढ़ी जाएँ। 5 और सोने की वस्तुओं के लिये सोना, और चाँदी की वस्तुओं के लिये चाँदी, और कारीगरों से बनानेवाले सब प्रकार के काम के लिये मैं उसे देता हूँ। **अब कौन अपनी इच्छा से यहोवा के लिये अपने को अर्पित कर देता है?**" 6 तब पितरों के घरानों के प्रधानों और इस्राएल के गोत्रों के हाकिमों, और सहस्रपतियों और शतपतियों, और राजा के काम के अधिकारियों ने **अपनी अपनी इच्छा से**, 7 परमेश्वर के भवन के काम के लिये **पाँच हज़ार किक्कार और दस हज़ार दर्कमोन सोना, दस हज़ार किक्कार चाँदी, अठारह हज़ार किक्कार पीतल,** और **एक लाख किक्कार लोहा** दे दिया। 8 **जिनके पास मणि थे, उन्होंने उन्हें यहोवा के भवन के खजाने के लिये गेर्शोनी यहीएल के हाथ में दे दिया।** 9 तब **प्रजा के लोग आनन्दित हुए**, क्योंकि हाकिमों ने प्रसन्न होकर **खरे मन** और **अपनी अपनी इच्छा से यहोवा के लिये भेंट दी** थी; और दाऊद राजा बहुत ही आनन्दित हुआ।

- यह भवन मनुष्य के लिये नहीं, यहोवा परमेश्वर के लिये बनेगा। यह बहुत महत्वपूर्ण कथन है, जिसे हम बाद में देखेंगे।

- हमें दाऊद के समान उस मंदिर की चाहत होनी चाहिए जहाँ परमेश्वर वास करता है।

- 2 कुरिन्थियों 9:7 हर एक जन जैसा मन में ठाने वैसा ही दान करे; न कुढ़ कुढ़ के और न दबाव से, क्योंकि **परमेश्वर हर्ष से देनेवाले से प्रेम रखता है।**

- उन्होंने दिल खोलकर और हर्षित होकर दिया ताकि परमेश्वर के मंदिर को महिमामय बना सकें!

पुराने नियम के मंदिर को अर्पित किया जाना

2 इतिहास 7:1-13 जब सुलैमान यह प्रार्थना कर चुका, तब **स्वर्ग से आग ने गिरकर** होमबलियों तथा अन्य बलियों को भस्म किया, **और यहोवा का तेज भवन में भर गया।** याजक यहोवा के भवन में प्रवेश न कर सके, क्योंकि **यहोवा का तेज यहोवा के भवन में भर गया था।** जब **आग गिरी** और **यहोवा का तेज भवन पर छा गया**, तब सब इस्राएली देखते रहे, और फर्श पर झुककर अपना अपना मुँह भूमि की ओर किए हुए दण्डवत् किया, और यों कहकर यहोवा का धन्यवाद किया,... "अब से जो प्रार्थना इस स्थान में की जाएगी, उस पर मेरी आँखें खुली और मेरे कान लगे रहेंगे। क्योंकि अब मैं ने इस भवन को अपनाया और पवित्र किया है कि मेरा नाम सदा के लिये इसमें बना रहे; मेरी आँखें और मेरा मन दोनों नित्य यहीं लगे रहेंगे।"

नए नियम में परमेश्वर का मंदिर बदल गया था।

1. यीशु परमेश्वर का मंदिर बन गया

मत्ती 12:6 मैं तुम से कहता हूँ कि यहाँ वह है जो **मन्दिर** से भी बड़ा है।

यूहन्ना 2:19 यीशु ने उनको उत्तर दिया, "**इस मन्दिर** को ढा दो, और मैं इसे तीन दिन में खड़ा कर दूँगा।"

- मंदिर — यीशु का अर्पण

लूका 3:21-22 जब सब लोगों ने बपतिस्मा लिया और यीशु भी बपतिस्मा लेकर प्रार्थना कर रहा था, तो आकाश खुल गया, और **पवित्र आत्मा** शारीरिक रूप में कबूतर के समान **उस पर** उतरा, और यह आकाशवाणी हुई : "तू मेरा प्रिय पुत्र है, मैं तुझ से प्रसन्न हूँ।"

यूहन्ना 1:14 और वचन, जो **अनुग्रह** और **सच्चाई** से परिपूर्ण था, देहधारी हुआ, और हमारे बीच में निवास किया, और **हमने उसकी ऐसी महिमा देखी** जैसी पिता के एकलौते की **महिमा।**

2. उसके शिष्य परमेश्वर का मंदिर बन गए

प्रेरितों 1:8 परन्तु जब **पवित्र आत्मा** तुम **पर** आएगा तब तुम सामर्थ्य पाओगे; और यरूशलेम और सारे यहूदिया और सामरिया में, और पृथ्वी की छोर तक मेरे गवाह होगे।"

प्रेरितों 2:2-4 एकाएक आकाश से बड़ी आँधी की सी सनसनाहट का शब्द हुआ, और उससे सारा घर जहाँ वे बैठे थे, गूँज गया। और उन्हें **आग** की सी जीभें फटती हुई दिखाई दीं और उनमें से हर एक **पर** आ ठहरीं। वे **सब पवित्र आत्मा से भर गए,** और जिस प्रकार आत्मा ने उन्हें बोलने की सामर्थ्य दी, वे अन्य अन्य भाषा बोलने लगे।

- जैसे हम सुलैमान के मंदिर के अर्पण के समय पढ़ते हैं।

3. और अब हम परमेश्वर का मंदिर हैं

2 कुरिन्थियों 6:16-17 क्योंकि **हम तो जीवते परमेश्वर के मन्दिर हैं**; जैसा परमेश्वर ने कहा है, **"मैं उनमें बसूँगा और उनमें चला फिरा करूँगा;** और मैं उनका परमेश्वर हूँगा, और वे मेरे लोग होंगे।" इसलिये प्रभु कहता है, "उनके बीच में से निकलो और **अलग रहो**; और अशुद्ध वस्तु को मत छूओ …

हमारा पानी का बपतिस्मा और पवित्र आत्मा का हम पर आना — जैसे यीशु और उसके शिष्यों, और सुलैमान के मंदिर के साथ था ....

परमेश्वर के मंदिर का हमारा अर्पण है

रोमियों 12:1-2 इसलिये हे भाइयो, मैं तुम से परमेश्वर की दया स्मरण दिला कर विनती करता हूँ कि **अपने शरीरों को जीवित, और पवित्र, और परमेश्वर को भावता हुआ बलिदान करके चढ़ाओ।** यही तुम्हारी आत्मिक सेवा है।

आपको इसी लिए सृजा गया है

आप परमेश्वर के मंदिर हैं

हमारा समर्पण वही है जैसे प्रथम मंदिर के साथ था।

1 इतिहास 29:1-2 ... **यह भवन मनुष्य के लिये नहीं, यहोवा परमेश्वर के लिये बनेगा।** मैं ने तो अपनी **शक्ति भर, अपने परमेश्वर के भवन के निमित्त ... इकट्ठा किया है।** ... तब प्रजा के लोग आनन्दित हुए, ... और **उन्होंने अपनी अपनी इच्छा से यहोवा के लिये भेंट दी थी।**

यह हमारी जिम्मेवारी है! कि परमेश्वर के मंदिर के रूप में

अपनी देह को तैयार करें और उसे अर्पित करें।

2 इतिहास 7 : 1-3 जब सुलैमान यह प्रार्थना कर चुका, तब **स्वर्ग से आग ने गिरकर** होमबलियों तथा अन्य बलियों को भस्म किया, **और यहोवा का तेज भवन में भर गया।** जब आग गिरी और **यहोवा का तेज भवन पर छा गया,** तब सब इस्राएली देखते रहे, और फर्श पर झुककर अपना अपना मुँह भूमि की ओर किए हुए दण्डवत् किया, और यों कहकर यहोवा का धन्यवाद किया, और यहोवा ने कहा : अब से जो प्रार्थना इस स्थान में की जाएगी, उस पर मेरी आँखें खुली और मेरे कान लगे रहेंगे। क्योंकि अब **मैं ने** इस **भवन को अपनाया और पवित्र किया है** कि **मेरा नाम सदा के लिये इसमें बना रहे; मेरी आँखें और मेरा मन दोनों नित्य यहीं लगे रहेंगे।**

यह ऐसा है जैसा यशायाह कहता है : 43:6-7

मेरे पुत्रों को दूर से और **मेरी पुत्रियों** को पृथ्वी के छोर से ले आओ; **हर एक को जो मेरा कहलाता है,** जिसको **मैं ने अपनी महिमा के लिये सृजा,** जिसको **मैं ने रचा** और **बनाया** है।

आपको परमेश्वर का मंदिर होने के लिए सृजा गया है

ताकि परमेश्वर की महिमा आपमें वास करे।

परमेश्वर के स्वरूप में सृजे जाने के नाते हमें इस पृथ्वी पर उसकी महिमा के दृश्य प्रतिनिधि और प्रकट रूप होना है।

यहाँ हमारा उद्देश्य और हमारे अस्तित्व का कारण हमारे पिता और हमारे उद्धारकर्ता यीशु मसीह को महिमा और आदर देना है।

यशायाह 43:7 जिसको मैं ने रचा और बनाया है।

आपका जन्म — आपका यहाँ होना — इत्तफ़ाक नहीं

यशायाह 44:24 यहोवा, तेरा उद्धारकर्ता, जो **तुझे गर्भ ही से बनाता आया है**, यों कहता है …

यिर्मयाह 1:5 गर्भ में रचने से पहले ही **मैं ने तुझ पर चित्त लगाया**, और उत्पन्न होने से पहले ही **मैं ने तेरा अभिषेक किया**; मैं ने **तुझे** जातियों का भविष्यद्वक्ता **ठहराया।**

जो कुछ उसने यिर्मयाह के लिए कहा वह आपके लिए भी "भविष्यवक्ता" तक सच है, क्योंकि उसने आपके लिए एक उद्देश्य और सेवकाई के वरदान ठहराए हैं, हो सकता है भविष्यवक्ता का, सुसमाचार प्रचारक का, शिक्षक का, सेवक का, या कोई और वरदान। देखें रोमियों 12:6-8

इफिसियों 1:4-6 जैसा उसने **हमें** जगत की उत्पत्ति से पहले उसमें **चुन लिया** कि हम उसके निकट प्रेम में **पवित्र और निर्दोष** हों। और अपनी इच्छा के भले अभिप्राय के अनुसार हमें अपने लिये पहले से ठहराया कि यीशु मसीह के द्वारा हम उसके लेपालक **पुत्र** हों

आपको परमेश्वर की महिमा के लिए सृजा गया है।

"यह परमेश्वर की महिमा का विषय है!"

यह सब आदम और हव्वा के साथ शुरू हुआ। लेकिन यहाँ एक बड़ी समस्या थी :

रोमियों 5:12 इसलिये जैसा एक मनुष्य के द्वारा **पाप** जगत में आया, और पाप के द्वारा **मृत्यु** आई, और इस रीति से मृत्यु सब मनुष्यों में फैल गई, क्योंकि **सब ने पाप किया।** (3:23) इसलिये कि सब ने पाप किया है और **परमेश्वर की महिमा से रहित हैं।**

परन्तु सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर के पास इसका उत्तर है

रोमियों 9:23 उसने **दया** के बरतनों पर, जिन्हें **उसने महिमा के लिये पहले से तैयार किया, अपने महिमा के धन को** प्रगट करने की इच्छा की

इफिसियों 1:11 … उसी में जिसमें हम भी **उसी की मनसा से जो अपनी इच्छा के मत के अनुसार** सब कुछ करता है, **पहले से ठहराए जाकर** मीरास बने 12 कि हम … **उसकी महिमा की स्तुति के कारण हों।**

और उसे पूरा करने के लिए, "उसकी इच्छा" को पूरा करने के लिए

पिता ने पुत्र को जगत का उद्धारकर्ता करके भेजा है। 1 यूहन्ना 4:14

जो पाप से अज्ञात था, उसी को उसने **हमारे लिये पाप ठहराया** कि हम **उसमें होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएँ।** 2 कुरि 5:21

और एक बार जब उसका प्रेम, और जो कुछ उसने हमारे लिए किया और प्राप्त किया, वह सब हमारे हृदय में गहराई से बैठ जाता है .... तो हम विवश हो जाते हैं कि ....

ऐसा जीवन जीएँ जिससे परमेश्वर को महिमा मिले।

2 कुरिन्थियों 5:14-15

क्योंकि **मसीह का प्रेम हमें विवश कर देता है;** (क्या वह करता है?) इसलिये कि हम यह समझते हैं कि जब एक सब के लिये मरा तो सब मर गए। और वह इस निमित्त सब के लिये मरा (क्यों) **कि जो जीवित हैं, वे आगे को अपने लिये न जीएँ परन्तु उसके लिये** जो उनके लिये मरा और फिर जी उठा।

इसलिए : 1 कुरिन्थियों 10:31 चाहे जो कुछ करो, सब कुछ परमेश्वर की महिमा के लिये करो।

हमारे प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह की महिमा दिखाई दी और लोग उसकी ओर आकर्षित हुए और वे उसके पीछे हो लिए .... जैसे उन्होंने किया, आपको और मुझे भी करना चाहिए।

यूहन्ना 1:14 और **वचन**, जो **अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण** था, देहधारी हुआ, और **हमारे बीच में निवास किया**, और **हमने उसकी ऐसी महिमा देखी** जैसी पिता के एकलौते की महिमा।

यही हमारे लिए भी कहा जाना **चाहिए!**

जबकि हम “लोगों के बीच में रहते” हैं, यह **वचन** देहधारी होना चाहिए ताकि लोग हमारे भीतर **परमेश्वर की महिमा देखें**, जो **अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण** हो।

तो, किस प्रकार हमारे भीतर **“वचन देहधारी”** होता है?

कुलुस्सियों 1:27 जिन पर परमेश्वर ने **प्रगट करना चाहा** कि उन्हें ज्ञात हो कि अन्यजातियों में उस भेद की **महिमा का मूल्य** क्या है, और वह यह है कि **मसीह जो महिमा की आशा है तुम में रहता है।**

- **मसीह जो ... तुम में** : **हम में** “**वचन**”, पवित्र आत्मा के व्यक्तित्व में .... जब हमारा नया जन्म होता है।

- **महिमा की आशा** – **एल्पिस** पूरे विश्वास के साथ अपेक्षा करना, जानते हुए आगे की ओर देखना। क्योंकि :

रोमियों 8:30 फिर **जिन्हें उसने पहले से ठहराया** (AAI), उन्हें **बुलाया** भी (AAI); और जिन्हें बुलाया, उन्हें **धर्मी भी ठहराया** (AAI) है; और जिन्हें धर्मी ठहराया, उन्हें **महिमा भी दी** (AAI) है।

A (Aorist))अनिर्दिष्ट भूतकाल : ऐसा कार्य जो भूतकाल में किसी बिंदु पर किया गया और पूरा हुआ।

A (Active)) कर्तृवाचक : कर्ता क्रिया को करता है – सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर

I (Indicative mood)निश्चायर्थक वृत्ति : ऐसी क्रिया या दशा जो निश्चित रूप में या पूरी तरह से हुई, एक तथ्य।

- अनंत परिप्रेक्ष्य में – हम महिमा पाते हैं – यह किया गया, पूरा हुआ।

- परन्तु पृथ्वी के परिप्रेक्ष्य से हम **तेजस्वी रूप में अंश अंश** करके **बदलते जाते हैं।**

2 कुरिन्थियों 3:18

परन्तु जब हम सब के उघाड़े चेहरे से **प्रभु का प्रताप** इस प्रकार प्रगट होता है, जिस प्रकार दर्पण में, तो प्रभु के द्वारा जो आत्मा है, हम **उसी तेजस्वी रूप में अंश अंश करके बदलते जाते हैं।**

- से प्रभु का प्रताप इस प्रकार प्रगट होता है, जिस प्रकार दर्पण में

दर्पण यह है : इस पृथ्वी और आकाशमंडल और जो कुछ उसमें है, उसकी अद्भुत और असाधारण रचना, विशेषकर **लोग**, जो उसके स्वरूप में सृजे गए।

एलिज़ाबेथ बर्रेट ब्राउनिंग कृत एक कविता

समस्त संसार उसकी महिमा से है भरा

परमेश्वर द्वारा हर झाड़ी है ज्वलित

लेकिन सिर्फ वही जिसके पास देखने को है आँख उतारता अपने जूते

बाकी चारों ओर बैठकर खाते हैं बेर।

(The whole earth is filled with His glory.

And every bush ablaze with God.

But only he who has eyes to see takes off his shoes.

The rest sit around and eat blackberries.)

और सबसे स्पष्ट दर्पण है :

परमेश्वर का वचन – लिखित वचन (लोगोस) और उसके कहे गए शब्द (रेहमा) जो परमेश्वर से प्रार्थना करने, उसके साथ सहभागिता रखने और घनिष्ठता से आता है।

जितना अधिक हम अपने को (1) वचन के अध्ययन और मनन, तथा (2) प्रार्थना, उसके साथ सहभागिता और घनिष्ठता के लिए देते हैं, उतना अधिक हम उसी तेजस्वी रूप में अंश अंश करके बदलते जाते हैं।

- "बदलते जाते हैं" **एक निरंतर होनेवाली प्रक्रिया** है।
- और इस बदलने को : **पवित्र किया जाना** कहते हैं
- यह यूनानी शब्द "हगियाज़ो" है — पवित्र बनाना, शुद्ध करना, या पवित्र कार्य के लिए अलग करना।

इसके दो आयाम हैं :

1. हम यीशु के लहू द्वारा **पवित्र किए गए** हैं और **पवित्र किए जाते हैं**। वैसे ही जैसे हमें **"महिमा भी दी है"** (रोमियों 8:30)

> एक समाप्त, पूरा हुआ कार्य। अनंत परिप्रेक्ष्य
>
> प्रेरितों के काम 26:18 जो मुझ पर विश्वास करने से **पवित्र किए गए हैं**
>
> 1 कुरिन्थियों 1:2 जो मसीह यीशु में **पवित्र किए गए**, और **पवित्र होने के लिये** बुलाए गए हैं
>
> 1 कुरिन्थियों 6:11 और तुम में से कितने ऐसे ही थे, परन्तु तुम प्रभु यीशु मसीह के नाम से और हमारे परमेश्वर के आत्मा से धोए गए और **पवित्र हुए** और **धर्मी ठहरे**, जब उन्होंने नया जन्म पाया था।

2. हम मसीह के जीवन के द्वारा भी जो हममें है, **पवित्र किए जाते हैं।**

> निरंतर प्रगतिशील कार्य।

कुलुस्सियों 1:27 जिन पर परमेश्वर ने प्रगट करना चाहा **कि उन्हें ज्ञात हो** कि अन्यजातियों में उस भेद की **महिमा का मूल्य** क्या है, और वह यह है कि **मसीह जो महिमा की आशा है तुम में रहता है।**

यह **तुम में मसीह** की **महिमा** है जिसके अनुसार हमें रहना है। और यदि मसीह हम में है — तो हम पवित्र, शुद्ध जीवन जी **सकते** हैं, **यदि** चाहें तो — **यदि** यह हमारे हृदय की इच्छा, हमारी प्राथमिकता, हमारी धुन है।

फिलिप्पियों 4:13 **जो मुझे सामर्थ्य देता है उसमें मैं सब कुछ कर सकता हूँ।**

इब्रानियों 10:14 क्योंकि उसने एक ही चढ़ावे के द्वारा उन्हें जो **पवित्र किए जाते** हैं, **सर्वदा के लिये सिद्ध कर दिया है।**

- यीशु के लहू के द्वारा **सर्वदा के लिये सिद्ध** — एक समाप्त कार्य। और **पवित्र किया जाना** निरंतर प्रक्रिया है।

1 पतरस 1:14-15 **आज्ञाकारी** बालकों के समान अपनी अज्ञानता के समय की पुरानी अभिलाषाओं के **सदृश न बनो।** पर **जैसा** तुम्हारा बुलानेवाला **पवित्र है**, वैसे ही तुम भी अपने सारे चालचलन में **पवित्र बनो** (हगीओई)।

- **आज्ञाकारी** बालकों के समान — हम या तो आज्ञाकारी हैं या अनाज्ञाकारी। अनाज्ञाकारी बच्चे अपने पिता से ताड़ना पाते हैं।
- **पुरानी अभिलाषाओं के सदृश न बनो — यह समस्या है। एक संघर्ष : सदृश्य रहना ... या बदलते जाना।**

परिवर्तन की प्रेरणा **यीशु मसीह** के प्रति हमारा **प्रेम** है।
यह इस बात का विषय है कि आप किसको, या किससे सबसे अधिक प्रेम करते हैं।

2 कुरिन्थियों 7:1 अत: हे प्रियो, जब कि ये प्रतिज्ञाएँ हमें मिली हैं, तो आओ, हम अपने आप को शरीर और आत्मा की सब मलिनता से **शुद्ध करें**, और **परमेश्वर का भय** रखते हुए **पवित्रता को सिद्ध** करें।

- क्योंकि :

इब्रानियों 12:10-11 **वह तो हमारे लाभ के लिये ताड़ना करता है, कि हम भी उसकी पवित्रता के भागी हो जाएँ।**

2 तीमुथियुस 2:21 यदि कोई **अपने आप को** इनसे **शुद्ध करेगा,** तो वह आदर का बरतन और **पवित्र ठहरेगा**; और स्वामी के काम आएगा, और हर भले काम के लिये तैयार होगा।

1 थिस्सलुनीकियों 4:3-5 क्योंकि **परमेश्वर की इच्छा यह है** कि तुम **पवित्र बनो** : अर्थात् व्यभिचार से बचे रहो, और तुम में से हर एक **पवित्रता** और **आदर** के साथ अपनी पत्नी को प्राप्त करना जाने, और यह काम अभिलाषा से नहीं, और न उन जातियों के समान जो परमेश्वर को नहीं जानतीं,

1 यूहन्ना 3:2-3 हे प्रियो, अब **हम परमेश्वर की सन्तान हैं,** और अभी तक यह प्रगट नहीं हुआ कि हम क्या कुछ होंगे! इतना जानते हैं कि जब वह प्रगट होगा तो **हम उसके समान होंगे**, क्योंकि उसको वैसा ही देखेंगे जैसा वह है। और **जो कोई** उस पर यह **आशा** रखता है, वह **अपने आप को** वैसा ही **पवित्र करता है जैसा वह पवित्र है।**

रोमियों 6:19 जैसे तुम ने अपने अंगों को कुकर्म के लिये अशुद्धता और कुकर्म के दास करके सौंपा था, वैसे ही अब अपने अंगों को **पवित्रता** के लिये **धार्मिकता** के **दास** करके **सौंप दो।**

(तुलना करें लूका 6:46)

1 थिस्सलुनीकियों 2:12 **कि तुम्हारा चाल-चलन परमेश्वर के योग्य हो,** जो **तुम्हें अपने राज्य और महिमा में बुलाता है।**

2 थिस्सलुनीकियों 2:14 **जिस के लिये** उसने तुम्हें हमारे सुसमाचार के द्वारा बुलाया, **कि तुम हमारे प्रभु यीशु मसीह की महिमा को प्राप्त करो।**

1 पतरस 2:12 अन्यजातियों में तुम्हारा चाल-चलन **भला** हो; ताकि जिन-जिन बातों में वे तुम्हें कुकर्मी जानकर बदनाम करते हैं, वे तुम्हारे **भले कामों** को देखकर उन्हीं के कारण कृपा-दृष्टि के दिन **परमेश्वर की महिमा करें।** ताकि ...

इफिसियों 5:27 और **उसे एक ऐसी तेजस्वी कलीसिया बनाकर अपने पास खड़ी करे**, जिसमें न कलंक, न झुर्री, न कोई और ऐसी वस्तु हो वरन् **पवित्र और निर्दोष** हो।

हमारा लक्ष्य — हमारे प्रभु यीशु की विश्वासयोग्य दुल्हन बनना है।

जिन पर परमेश्वर ने प्रगट करना चाहा कि **उन्हें ज्ञात हो** कि अन्यजातियों में उस भेद की **महिमा का मूल्य** क्या है, और वह यह है कि **मसीह** जो **महिमा की आशा** है **तुम में** रहता है। कुलुस्सियों 1:27

यह **तुम में मसीह** की **महिमा** है जिसे हमें जीना है और जिसके लिए हमें जीना है।

और यदि मसीह हम में है — तो हम पवित्र, शुद्ध जीवन जी सकते हैं जिससे हमारे प्रभु यीशु मसीह और हमारे पिता परमेश्वर को आदर और महिमा मिले।

“यह परमेश्वर की महिमा का विषय है”

इफिसियों 1:4 जैसा उसने **हमें** जगत की उत्पत्ति से पहले उसमें **चुन लिया कि हम उसके निकट** प्रेम में **पवित्र** और **निर्दोष** हों।

हमें इस कारण सृजा गया, हमें परमेश्वर की महिमा के लिए सृजा गया

कि हम, ... **उसकी महिमा की स्तुति के कारण हों।** इफिसियों 1:12

हम “उसके पद-चिह्नों पर चलने” के द्वारा परमेश्वर की महिमा और उसका आदर करते हैं।

1 पतरस 2:21

अपनी सेवकाई के अंत में, यीशु ने अपने पिता से कहा :

जो कार्य तू ने मुझे करने को दिया था, **उसे पूरा करके मैं ने पृथ्वी पर तेरी महिमा की है।**

यूहन्ना 17:4

हमें यही बात कहने के इस योग्य होने की आवश्यकता है, हमें इस योग्य होना चाहिए।

हम उस काम को करके जो उसने हमें करने के लिए दिया है, हमारे पिता और प्रभु यीशु मसीह की महिमा करते हैं।

यूहन्ना 17:18 **जैसे तू ने मुझे जगत में भेजा, वैसे ही मैं ने भी उन्हें जगत में भेजा।** 22 **वह महिमा** जो तू ने मुझे दी **मैं ने उन्हें दी है**

- लोग **हम में मसीह** की महिमा देखते हैं।
- और उसकी समानता में परिवर्तित होकर हम लोगों को अलग तरह से देखते हैं — हम लोगों के **महत्व** को समझते हैं।
- उनके लिए हमारे मन में **करुणा** और **प्रेम** है जो हमें वही कार्य करने को प्रेरित करता है जो **यीशु** लोगों के लिए करता था।

यीशु सब नगरों और गाँवों में फिरता रहा और उनके आराधनालयों में **उपदेश** करता, और राज्य का **सुसमाचार प्रचार करता, और हर प्रकार की बीमारी और दुर्बलता को दूर करता रहा।** जब उसने **भीड़ को देखा तो** उसको लोगों पर **तरस आया**, क्योंकि वे उन भेड़ों के समान जिनका कोई रखवाला न हो, व्याकुल और भटके हुए से थे। मत्ती 9: 35-38

हमें लोगों को इसी प्रकार देखना चाहिए

इसका अगला पद कहता है :

मत्ती 10:1 फिर उसने अपने बारह चेलों को पास बुलाकर, उन्हें अशुद्ध आत्माओं पर **अधिकार** दिया कि उन्हें निकालें और सब प्रकार की बीमारियों और सब प्रकार की दुर्बलताओं को **दूर करें।**

जब हम यीशु के जीवन को देखते हैं तो हम उन कार्यों को देखते हैं जो उसने हमारे लिए ठहराया है।

यूहन्ना 2:11 यीशु ने गलील के काना में अपना यह **पहला चिह्न** दिखाकर (1) **अपनी महिमा** प्रगट की और (2) उसके चेलों ने उस पर **विश्वास किया।**

हमें चिह्नों, अद्भुत कार्यों और चमत्कारों का असाधारण जीवन जीना है, जिसमें परमेश्वर की महिमा प्रकट हो ताकि अन्य लोग भी अपने आपको पूर्ण रूप से उसके हाथों में सौंप दें।

यूहन्ना 11:4 यह बीमारी मृत्यु की नहीं; परन्तु **परमेश्वर की महिमा** के लिये है, कि **उसके द्वारा परमेश्वर के पुत्र की महिमा हो।**

यूहन्ना 11:40 यदि तू विश्वास करेगी, तो **परमेश्वर की महिमा** को देखेगी।

मत्ती 5:16 उसी प्रकार **तुम्हारा उजियाला** (तुम में मसीह की महिमा) मनुष्यों के सामने **चमके** कि वे तुम्हारे भले कामों को **देखकर तुम्हारे पिता की**, जो स्वर्ग में है, **बड़ाई करें।**

यूहन्ना 15:8 मेरे पिता की **महिमा इसी से होती है** कि तुम **बहुत सा फल लाओ**, तब ही तुम मेरे चेले **ठहरोगे।**

2 कुरिन्थियों 9:13 क्योंकि **इस सेवा को प्रमाण स्वीकार कर** वे **परमेश्वर की महिमा प्रगट करते हैं** कि तुम मसीह के सुसमाचार को मान कर उसके अधीन रहते हो

"यह परमेश्वर की महिमा का विषय है"

इसलिये तुम जो कुछ करो, सब कुछ परमेश्वर की महिमा के लिये करो। 1 कुरिन्थियों 10:31

आपको इसी के लिए सृजा गया है।

आपको परमेश्वर की महिमा के लिए सृजा गया है।

1 कुरिन्थियों 6:19-20

... तुम में से प्रत्येक की देह पवित्र आत्मा का मन्दिर है, जो तुम में है और जिसे तुमने परमेश्वर से पाया है, और कि **तुम अपने नहीं हो।** क्योंकि **दाम देकर मोल लिये गए हो, इसलिये अपनी देह के द्वारा परमेश्वर की महिमा करो।**

"यह परमेश्वर की महिमा का विषय है"

भजन संहिता 72:18-19

धन्य है यहोवा परमेश्वर, आश्चर्यकर्म केवल वही करता है। उसका महिमायुक्त नाम सर्वदा धन्य रहेगा; और **सारी पृथ्वी उसकी महिमा से परिपूर्ण होगी।**

आमीन फिर आमीन।